श्री सप्तर्षि पूजा

ये पर्व वर्ष में एक समय मनाया जाता है

1. श्रावण शुक्ला पूर्णिमा (रक्षाबंधन)

१/९
पीले चावल/लौंग क्षेपण करना

प्रथम नाम श्रीमन्व दुतिय स्वरमन्व ऋशीश्वर।
तीसर मुनि श्रीनिचय सर्वसुन्दर चौथो वर।।
पंचम श्रीजयवान विनयलालस षष्ठम भनि।
सप्तम जयमित्रारव्य सर्व चारित्र-धाम गनि।।
ये सातों चारण-ऋद्धि-धर, करूं तास पद थापना।
मैं पूजूं मन वचन काय करि,जो सुख चाहूँ आपना।।

ॐ ह्रीं चारण ऋद्धिधर श्रीसप्त ऋशीश्वरा:! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट्।
ॐ ह्रीं चारण ऋद्धिधर श्रीसप्त ऋशीश्वरा:! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठ: ठ:।
ॐ ह्रीं चारण ऋद्धिधर श्रीसप्तऋशींश्वरा:! अत्र मम सन्निहितो भवत-भवत वषट्।

झारी से जल

शुभ-तीर्थ-उद्भव-जल अनूपम, मिष्ट शीतल लायकै।
भव-तृषा-कंद-निकंद-कारण, शुद्ध-घट भरवायकै।।
मन्वादि चारण-ऋद्धि-धारक, मुनिनकी पूजा करूं।
ता करें पातक हरें सारे, सकल आनंद विस्तरूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीचारण-ऋद्धिधर श्रीमन्व-स्वरमन्व-निचय-सर्वसुन्दर-जयवान-विनयलालस-जयमित्र ऋषिभ्यों जलं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

चन्दन जल

श्रीखंड कदलो नंद केशर, मंद मंद घिसायकैं।
तस गंध प्रसरित दिग-दिगंतर, भर कटोरी लायकै।। मन्वादि...

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिसप्तर्षिभ्य: चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

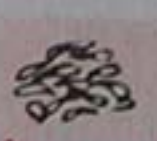

सफेद चावल

अति धवल अक्षत खंड-वर्जित,मिष्ट राजन भोग के।
कलधौंत-थारा भरत सुन्दर, चुनित शुभ उपयोग के।। मन्वादि...

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिसप्तर्षिभ्यों अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

पीले चावल

बहु-वर्ण सुवरण-सुमन आछे,अमल कमल गुलाब के।
केतकी चंपा चारु मरुआ,चुने निज-कर चावके।। मन्वादि...

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिसप्तर्षिभ्य: पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

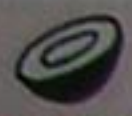
सफेद चिटकी

पकवान नानाभांति चातुर, रचित शुद्ध नये नये।
सदमिष्ट लाडू आदि भर बहु, पुरटके थारा लये।। मन्वादि...

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिसप्तर्षिभ्यों नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

पीली चिटकी

कलधौंत-दीपक जड़ित नाना, भरित गोघृत-सारसों।
अति ज्वलितजगमग-ज्योति जाकी, तिमिर नाशनहारसों।। मन्वादि...

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिसप्तर्षिभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥६ ॥

धूप

दिक्-चक्र गंधित होत जाकर, धूप दश-अंगी कहीं।
सो लाय मन-वच-कायशुद्ध, लगाय कर खेऊं सही।। मन्वादि...

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिसप्तर्षिभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥७ ॥

फल

वर दाख खारक अमित प्यारे, मिष्ट चुष्ट चुनायकै।
द्रावडी दाडिम चारु पूंगी, थाल भर भर लायकै।। मन्वादि...

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिसप्तर्षिभ्यों फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥८ ॥

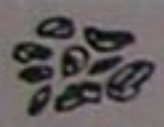
अर्घं

जल गंध अक्षत पुष्पं चरुवर, दीप धूप सु लावना।
फल ललित आठों द्रव्य-मिश्रित, अर्घ कीजे पावना।। मन्वादि...

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिसप्तर्षिभ्यों अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥९ ॥

जयमाला

वंदू ऋषिराजा धर्म-जहाजा निज-पर-काजा करत भले।
करुणा के धारी गगन-विहारी दुख-अपहारी भरम दले।।
काटत जम-फंदा भवि-जन-वृंदा करत अनंदा चरणन में।
जो पूजैं ध्यावै मंगल गावै फेर न आवै भव-वन में।। १ ।।

जय श्रीमनु मुनिराजा महंत, त्रस-थावरकी रक्षा करंत।
जय मिथ्या-तम-नाशक पतंग, करुणा-रस-पूरित अंग अंग।
जय श्रीस्वरमनु अकलंकरूप, पद-से करत नित अमर भूप।
जय पंच अक्ष जीते महान, तप तपत देह कंचन समान।

जय निचय सप्त तत्त्वार्थ भास, तप-रमातनों तनमें प्रकाश।
जय विषय-रोध संबोध भान, परपरणति नाशन अचल ध्यान।
जय जयहि सर्वसुन्दर दयाल, लखि इन्द्रजालवत जगत-जाल।
जय तृष्णाहारी रमण राम, निज परणतिमें पायो विराम।

जय आनँदधन कल्याण रूप, कल्याण करत सबको अनूप।
जय मद-नाशन जयवान देव, निरमद विचरत सब करतसेव।
जय जयहिं विनयलालस अमान, सब शत्रु मित्र जानत समान।
जय कृशित-काय तपके प्रभाव, छवि-छटा उड़ति आनंद-दाय।

जयमित्र सकल जगके सुमित्र, अनगिनत अधम कीने पवित्र।
जय चन्द्र-वदन राजीव-नैन, कबहूं विकथा बोलत न बैन।
जय सातों मुनिवर एक संग, नित गगन-गमन करते अभंग।
जय आये मथुरा पुर मँझार, तहं मरी रोग को अति प्रचार।

जय जय तिन चरणनिके प्रसाद, सबमरी देवकृत भई वाद।
जय लोक करे निर्भय समस्त, हम नमत सदा नित जोड़ हस्त।
जय ग्रीषम-ऋतु पर्वत मँझार, नित करत अतापन योग सार।
जय तृषा-परीषह करत जेर, कहुं रंच चलत नहिं मन-सुमेर।

जय मूल अठाइस गुणन धार, तप उग्र तपत आनंदकार।
जय वर्षा-ऋतु में वृक्ष-तीर, तहँ अति शीतल झेलत समीर।
जय शीत-काल चौपट मँझार, कै नंदी-संरोवर-तट विचार।
जय निवसत ध्यानारूढ़ होय, रंचकनहि मटकत रोम कोय।

जय मृतकासन वज्रासनीय, गोदूहन इत्यादिक गनीय।
जय आसन नानाभांति धार, उपसर्ग सहत ममता निवार।
जय जपत तिहारी नाम कोय, लख पुत्र पौत्र कुल वृद्धि होय।
जय भरे लक्ष अतिशय भंडार, दारिद्रतनो दुख होय छार।

जय चोर अग्नि डाकिन पिशाच, अरु ईति भीति सब-नसत सांच।
जय तुम सुमरत सुख लहत लोक, सुर असुर नमत पद देत धोक।

ये सातों मुनिराज, महातप लक्ष्मी धारी।
परम पूज्य पद धरैं, सकल जगके हितकारी।।
जो मन वच तन शुद्ध, होय सेवै औ ध्यावै।
सो जन 'मनरंगलाल', अष्ट ऋद्धिनकौ पावै।।

नमन करत चरनन परत, अहो गरीबनिवाज।
पंच परावर्तननितैं, निरवारो ऋषिराज।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिसप्तर्षिभ्यों पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।